

प्रेमचन्द का जन्म उत्तरप्रदेश के वाराणसी जिले के लमही नामक गाँव में 31 जुलाई, 1880 को हुआ था। इनकी माता आनन्दी देवी थीं। पिता अजायबराय डाक मंशी थे। प्रेमचन्द ने बचपन में ही दोनों को खो दिया था। प्रेमचन्द का असली नाम धनपतराय श्रीवास्तव था। 1898 में मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करके वह शिक्षक बन गए। 1919 में बी. ए. किया और शिक्षा विभाग में इंस्पेक्टर हो गए। इन्होंने ने बाल-विधवा शिवरानी देवी से दूसरा विवाह किया। इनकी तीन संतानें हुईं। पहले यह नबावराय के नाम से उर्दू में लिखते थे।

अंग्रेज सरकार ने इनकी 'सोजेवतन' नामक रचना पर प्रतिबन्ध लगा दिया। मंशी दयानारायण की सलाह पर बाद में यह प्रेमचन्द के नाम से हिन्दी में लिखने लगे। सन् 1936 में बीमारी के बाद इनका निधन हो गया।

**साहित्यिक परिचय** – प्रेमचन्द हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार तथा कहानी सम्राट थे। यह उपाधि इनको बाँग्ला भाषा के प्रसिद्ध कथाकार शरदचन्द्र चट्टोपाध्याय ने दी थी। प्रेमचन्द ने हिन्दी गद्य की कहानी, उपन्यास, निबन्ध, नाटक आदि विधाओं को समृद्धि प्रदान की। सम्पादन और अनुवाद का कार्य भी इन्होंने सफलतापूर्वक किया।

प्रेमचन्द ने 301 कहानियाँ लिखीं जिनमें से तीन अब प्राप्त नहीं हैं। कुछ विद्वान 'संसार का अनमोल रत्न' को उनकी पहली कहानी मानते हैं किन्तु कुछ अन्य 'पंच परमेश्वर' (1916 ई.) को प्रथम कहानी का श्रेय देते हैं। इनका उपन्यास 'मंगलसूत्र' अधूरा ही रह गया था, जिसको इनके पुत्र अमृतराय ने पूरा किया।

रचनाएँ – प्रेमचन्द की निम्नलिखित रचनाएँ हैं –

(1) कहानी – 'सोजे वतन' – उर्दू भाषा में लिखी कहानियों का संग्रह (1908)। जीवन काल में प्रकाशित कहानी-संग्रह- 'सप्त सरोज', 'नवनिधि', 'प्रेम पूर्णिमा', 'प्रेम पचीसी', 'प्रेम प्रतिमा',

‘कफन’। उनका मृत्यु क बाद उनका कहानिया  
‘मानसरोवर’ शीर्षक से 8 खण्डों में प्रकाशित हुईं। ‘पंच  
परमेश्वर’ को इनकी पहली तथा ‘कफन’ को अन्तिम कहानी  
माना जाता है।

उपन्यास – ‘वरदान’ (अनूदित) ‘प्रेमा’, ‘रूठी रानी’,  
‘सेवासदन’, ‘प्रेमाश्रम’, ‘रंगभूमि’, ‘कायाकल्प’, ‘निर्मला’,  
‘गबन’, ‘कर्मभूमि’, ‘गोदान’ तथा ‘मंगलसूत्र’  
(अपूर्ण) ।

नाटक – ‘संग्राम’, ‘कर्बला’।

**निबन्ध** – ‘प्रेमचन्द : विविध प्रसंग’ (तीन भाग), ‘प्रेमचन्द : कुछ विचार’, ‘साहित्य का उद्देश्य’, ‘कहानी कला (तीन भाग)’, ‘हिन्दी उर्दू की एकता’, ‘महाजनी सभ्यता’, ‘उपन्यास’, ‘जीवन में साहित्य का स्थान’ इत्यादि।

**अनुवाद** – ‘टालस्टॉय की कहानियाँ तथा गाल्सवर्दी के तीन नाटक – ‘हड़ताल’, ‘चाँदी की डिबिया, और ‘न्याय’।

**सम्पादन** – ‘माधुरी’, ‘मर्यादा’, ‘हंस’ तथा ‘जागरण’ नामक पत्र-पत्रिकाएँ।

धन्यवाद